

रसि, कैरति, कैरयस्, कैरतस्, कैरत्ति; med. कैरसे, कैरते, कैरामहे; imperf. कैरम्, कैरस्, कैरत् (als aor. betrachtet P. 3, 1, 59); imperat. कैर, कैरतम्, कैरताम्; conj. कैरम्, कैराणि, कैरस्, कैरत्, कैराम, कैरन्; med. कैरामहे; partic. कैरसी (NAIGH. 2, 1). — III) nach der 5ten Kl. praes. कृणोमि, कृणोषि, कृणोति, कृणुष्व, कृणुमस् und कृणुमसि, कृणुव, कृण्वेति; med. कृण्वे, कृणुवै, कृणुते, कृण्वेते (RV. 6, 28, 4), कृण्वहे, कृण्वेते; imperf. कृणोस्, कृणोत्, कृणुतम्, कृणुतु und कृणोतान (RV. 1, 110, 8), कृणोतन्; med. कृणुत, कृणुधम्, कृणवत; imperat. 2. sg. कृणु, कृणुह् and कृणुतु, कृणोतु, कृणुतम्, कृणुताम्, 2. pl. कृणुत, कृणोत und कृणोतान, कृण्वतु; med. कृणुव, कृणुताम्, कृणुवाम्, कृणुधम्; conj. कृणुवस्, कृणुवतु und कृणुवात्, कृणुवाव, कृणुवाम, कृणुवाथ, कृणवथ, कृणवन्; med. कृण्वे (कृणवा Padap., कृणव RV. 10, 93, 2 ist wohl als act. zu fassen), कृणवसे (Çveriv. Up. 2, 7 कृणवसे, aber Çāṅk. कृणवसे = कुरुष्व, was auch zum Metrum passt), कृणवते, कृणुवावहे, कृणुवामहे, 3. pl. कृणवत, °वते und कृणवत; potent. med. कृण्वीते; partic. कृण्वत्, कृण्वती; med. कृणवान्. — IV) nach der 8ten Kl. ved. (die gewöhnliche Form in den Brāhmaṇa und Sūtra) und klass. कैरामि (ep. कुर्मि MBu. 3, 10943. R. 2, 12, 33. Diese Form hat sich nach der Analog. von कुर्वस् und कुर्मस् gebildet), कुर्वस्, कुरुवस्, कुरुतम्, कुर्मस् (कुर्मस् Einschubung nach RV. 10, 128, wo TS. कुर्मस् hat), कुरुव, कुर्वेति; med. कुर्वे, कुरुवै, कुरुते, कुर्वहे, कुर्वये, कुर्वते, कुर्महे, कुरुधे, कुर्वते P. 6, 4, 108-110; imperf. कुरुवम्, कुरुवस्, कुरुवत्, कुरुव, कुरुवतम्, कुरुवतु, कुरुवत, कुरुवन्; med. कुरुवत, कुरुवतु, imperat. कुरु, कुरुतु (in der älteren Sprache कुरुतात् 2. und 3. Person; für die 3te Pers. auch Bhāg. P. 6, 4, 34), कुरुत und कुरुतान (Nir. 4, 7); med. कुरुष्व, कुरुधम्, कुर्वताम्; conj. कुरुवाणि, कुरुवस्, कुरुवात्, कुरुवाव und कुरुवावस् (P. 3, 4, 98, Sch.), कुरुवाम (auch कुरुवामस् P. 3, 4, 98, Sch.), कुरुवाथ, कुरुवन्; med. कुरुवै, कुरुवास्, कुरुवावहे (TAITT. Up. 2, 1, 3, 1. कुरुवावहे MBu. 3, 10762), कुरुवैये, कुरुवैते (P. 3, 4, 93, Sch.), कुरुवामहे (कुरुवामहे MBu. 1, 5166. 3, 2469. R. 1, 18, 19, wo aber nach den Corrigg. कुरुवामहे zu lesen ist; GORR. 1, 18, 12: कुरुवाम हे); potent. कुरुयाम्, med. कुर्वीपि P. 6, 4, 109, 110; partic. कुर्वत्, कुर्वती; med. कुर्वीष्. — perf. चकार, चकथ, चकर्व, चकर्म, चक्रे, चक्रै, चक्रिरे; partic. चक्रवम् (acc. चक्रवम् RV. 10, 137, 1), चक्राणौ (Vop. 26, 132. 135); करिष्यति, conj. करिष्यात् (RV. 4, 30, 23); कैती; क्रियौसम्; aor. ved. चकारम् RV. 4, 42, 6, अचक्रिन् 8, 6, 20, अचक्रत् 4, 18, 12 (चक्रैत्? NAIGH. 2, 1), med. 1. sg. कृषे 10, 49, 7; klass. अकार्षीत् (अकार्षीत् Bhāg. P. 1, 10, 1) P. 7, 2, 1, Sch.; pass. aor. refl. अकारि und अकृत 3, 1, 62, Sch. Vop. 24, 10; infin. कर्तुम्, कर्तवे, कर्तव्ये (NAIGH. 2, 1), कर्तास्; gerund. कर्त्वा, कर्त्वा, कर्त्वाय. 1) *Etwas machen* in der weitesten Bedeutung: vollbringen, ausführen, bewirken, verursachen, zu Stande bringen, anfertigen, bereiten, veranstalten, begehen u. s. w.: यदीमुष्मसि कर्तवे कर्तव्यम् RV. 10, 74, 6. अहे ता विद्या चकारम् 4, 42, 6. कृष्यमिन्द्राय कर्तन 1, 142, 12. 184, 5. अयं वा यज्ञो अकृत प्रशस्तिम् 181, 1. चक्रवामो मधुनि 5, 43, 3. आगः 7, 87, 7. पापम् ÇAT. Br. 4, 6, 8, 12. पौष्यम् RV. 8, 3, 20. अयसि 7, 63, 4. वीर्यम् Ait. Br. 8, 16. अक्षम् ÇAT. Br. 14, 3, 4, 1. अग्निपितृं करते RV. 4, 16, 1. सः 6, 16, 17. तं देवाश्चक्रिरे धर्मम् (in anderm Sinne unten u. 5.) ÇAT. Br. 14, 4, 2, 34. M. 2, 154. प्रज्ञो कार् पादपोतिव AV. 14, 2, 37. ज्योतिः VS. 11,

H. Theil.

3. मूत्रम् 22, 8. KĪTJ. Çr. 9, 6, 22. N. 7, 3. JĀG. 1, 16 (मूत्रपुरीषे). M. 4, 45 (vgl. विपमूत्रस्य विसर्जनं कर 48). — आवसथम् R. 1, 1, 31. पुरीम् 47, 13. सभाम् MBu. 2, 17. गृहम् PAÑKAT. I, 436. शास्त्रम् M. 1, 58. PAÑKAT. Pr. 3. काव्यम् R. 1, 4, 1. रामकवाम् 2, 38. महेतसवम् VID. 54. अञ्जलिम् R. 1, 3, 2. 9, 62. यद्यत्ते प्रतिभाति तत्कुरुष्व PAÑKAT. 66, 19. रतिमुभयप्रार्थना कुरुते bereitete ÇĀK. 34. 178. कर्म M. 1, 55. 2, 142. MBu. 3, 11823. R. 2, 66, 14. कार्यम् MBu. 3, 15592. सख्यम् Freundschaft schliessen R. 1, 1, 59. Viçv. 15, 23. स्नेहम् Hit. 24, 1. सौहृद्यम् 11. साहाय्यम् N. 2, 30. 6, 14. समयम् 7, 1. सामर्थ्यम् 3, 22. पूजाम् Ehre erweisen, ehren R. 1, 2, 2. अभिषेकम् 23. संमार्जनम् PAÑKAT. 30, 4. यत्रम् Viçv. 10, 7. प्रयत्नम् PAÑKAT. I, 24. भिताम् 12. उद्यमम् P. 1, 3, 75, Sch. कृयाम् VID. 266. राज्यम् Herrschaft üben, regieren R. 1, 1, 38. 42, 27. तेन वाक्ये कृते सम्यक्प्रतिवाक्ये चाकृते N. 24, 24. कथाः Viçv. 2, 11. Eine solche periphrastische Ausdrucksweise ist überaus beliebt und eine Vermehrung der Beispiele würde nur Raumverschwendung sein, zumahl da unter dem betreffenden subst. diese Verbindung auch zur Sprache kommt. — 2) चकार und चक्रे in Verbind. mit einem bes. nom. act. im acc. als Hilfsverb. zur Bildung des periphr. perf. P. 3, 1, 40. Vop. 8, 56. Im Veda überaus selten (गमयो चकार AV. 18, 2, 27), in den Brāhmaṇa schon ganz gewöhnlich. प्रेता स्म चक्रुः (in der Regel nom. act. und verb. fin. neben einander) MBu. 1, 7012. Im praes.: श्रुत्वा करोति ÇĀṆK. Çr. 16, 13, 5. im imperf. und precat. ved.: अमृतसादयामकः, प्रजनयामकः, चिक्रियामकः, रमयामकः, विदामक्रन्, पावयो क्रियात् P. 3, 1, 42. im imperat. mit विदाम् 41. Vop. 9, 19. — 3) Jmd (gen. loc.) d. i. zu Jmdes Frommen oder Schaden Etwas thun: किं करवाणि ते MBu. 3, 2160. करिष्यामि तव प्रियम् N. 1, 19. तया हि मे बद्ध कृतम् 18, 18. उः खितानां सपत्नीनां न करिष्यति शोभनम् R. 2, 31, 13. Bhāṭṭ. 13, 9. यद्वा चापि प्रियं किञ्चिन्मयि कर्तुमिच्छसि N. 17, 20. न तन्ने सद्गो देवि यन्मया राघवे कृतम्। सद्गो तनु तस्यैव यदनेन कृतं माये || Daç. 2, 61. — 4) Jmd Etwas machen d. i. verschaffen, zutheilen: कृधि नो भागधेयम् RV. 8, 83, 8. 10, 34, 12. तौ ते भूतं चक्रतुः VS. 8, 37. करो यत्र वारिवो वाधिताय RV. 6, 18, 14. कम्बेवैतप्रज्ञाभ्यः कुरुते ÇAT. Br. 2, 3, 2, 11. 8. तत्रापि विशं प्रत्युद्यामिनीं कुर्युः Ait. Br. 6, 21. कुर्वीणा चीरमात्मनः। वासांसि मम गावश्च। अन्नपाने च सर्वदा TAITT. Up. 1, 4, 2. दाराः पितृकृताः R. 1, 77, 26. MBu. 1, 2784. किं मे धर्माद्विहीनस्य राजधर्मः करिष्यति R. 2, 102, 1. अथास्य नाम करोति Brh. År. Up. 6, 4, 26. RĀGA-TAN. 3, 232. med. sich verschaffen, sich aneignen, annehmen: दितोयं नाम कुर्वेति ÇAT. Br. 3, 6, 2, 14. 14, 4, 2, 8. जिनामीमाः कुर्वे इवाः 5, 4, 2, 10. त्राणयात्मने ऽकुरुत Brh. År. Up. 1, 5, 1. स्वयं रूपं कुरुष्व यादृशमिच्छसि ÇAT. Br. 13, 2, 2, 11. (भरतः) नानात्रपाणि कुर्वीणाः JĀG. 3, 162. कृत्वा त्रपाण्यनेकशः R. 1, 23, 18. M. 7, 10. Viçv. 14, 7, 8. स्वं चैव रूपं कुर्वतु (act. wohl wegen स्वम्; vgl. आत्मनः परम् रूपं चकार BRAHMA-P. in LA. 53, 2) N. 5, 21. स चक्रे सुमहत्कायम् R. 3, 50, 26. स (हेसः) मानुषो गिरं कृत्वा N. 1, 25. — 5) आज्ञाम्, निदेशम्, शासनम्, कामम्, याचनाम्, वचस्, वचनम्, वाक्यं कार् Jmdes Befehl, Wunsch, Verlangen, Worte thun d. i. vollbringen, ausführen: न तदाज्ञो चकार सा (vgl. आज्ञाकर) R. 3, 53, 11. निदेशं कर्तुं ते 2, 34, 44. कुरुष्व मम शासनम् Viçv. 14, 5. कामं च ते करिष्यामि यन्मो वक्ष्यसि N. 20, 15, 19, 8. कुरु नो याचनाम् R. 2, 37, 19. कुरुष्व याचनाम् 27, 22. गुरुवचः कुर्वन् 1, 76, 14. 28, 4. 2, 21, 31. 3, 27, 3. 40, 6. MBu. 3, 2289. Bhāg. 18, 73.

6